पंचदेव साधना

आशीर्वाद
परमपूज्य गुरुदेव
डा. नारायणदत्त श्रीमाली

पी.डी.एफ. निर्माण
अजय कुमार उत्तम

Scanned by CamScanner

जिस विराट साधना में साधना तत्व प्रारम्भ से पूर्णता की ओर है

वही साधना है

पंचदेव साधना

शिव, शक्ति, सूर्य, विष्णु, महागणपति, ही तो आधार देव हैं

शरीर को ही पूर्ण ब्रह्म का स्वरूप माना गया है, और इस शरीर में पंचतत्व ही माने गये हैं, ये पांच तत्व आकाश तत्व, अग्नि तत्व; वायु तत्व, पृथ्वी तत्व और जल तत्व हैं, इनमें से प्रत्येक तत्व का विशेष स्थान है, प्रत्येक तत्व के परस्पर सहयोग से ही शरीर गतिमान रहता है, विशेष बात यह है, कि ये पांच तत्व ही ब्रह्म के स्वरूप हैं, इसी कारण इन पंच तत्वों से बने शरीर से पंचदेव ब्रह्म की साधना सम्पन्न की जाती है।

देव तो अनेकानेक हैं, और साधक को इस संबंध में किसी भी प्रकार का भूल-भुलावा नहीं रखना चाहिए, कि क्या साधना-उपासना, आराधना करे, और किस साधना-उपासना को छोड़ दे, चाहे हजार देवता हों अथवा लाख, पंचदेवों से ही सभी देवताओं का प्रादुर्भाव हुआ है, ऐसा क्यों है? और इसका मूल रहस्य क्या है ? यह समझना भी आवश्यक है।

पंचदेव साधना

क्या शरीर के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है ? यह असंभव लगता है, क्योंकि जब आप स्वयं, अर्थात् शरीर ही नहीं रहे, तो उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, इसीलिए शरीर-तत्व को प्रधानता दी गई है और शरीर पंचतत्वों का मिश्रण है और प्रत्येक तत्व के विशिष्ट अधिपति हैं—विष्णु आकाश तत्व के, सूर्य वायु तत्व के, शक्ति अग्नि तत्व की, शिव पृथ्वी तत्व के तथा गणेश जल तत्व के अधिष्ठाता देवता हैं, जिस प्रकार किसी एक तत्व की कमी हो जाने पर शरीर में व्याधि आ जाती है, उसी प्रकार इन देवों की उपासना का भी आवश्यक विधान, उस बाधा को दूर करने के लिए आवश्यक है।

विष्णु का तात्पर्य है 'सर्व व्याप्त', शिव का अर्थ है 'कल्याणकारी', गणेश का अर्थ है 'समस्त गणों के ईश', सूर्य का अर्थ है 'सर्वगत', शक्ति का तात्पर्य है 'सामर्थ्य',

और यही तो पूरे ब्रह्माण्ड की घटना अघटना है, इसीलिए तो पंचदेव साधना ही पूर्ण साधना है।

यदि शास्त्र कहीं शिव की, कहीं सूर्य की, कहीं विष्णु की, कहीं देवी शक्ति की उपासना लिखते हैं, और इनमें से प्रत्येक के बारे में हजारों-हजारों ग्रन्थ हैं, तो इनमें सन्देह का कोई तत्व ही नहीं है, क्योंकि ये सभी उपासनाएं ही तो साकार-निराकार, परब्रह्म, परमबिन्दु, परमतत्व के प्रतिरूप की साधनाएं हैं, और जिस साधक की जो भावना रहती है, उसी के अनुसार तो उसे फल प्राप्ति होती है।

साधना का रहस्य कोई गहरा रहस्य नहीं है, क्योंकि साधक को साधना के समय बुद्धि के उपयोग की आवश्यकता नहीं है, उस समय तो अपने हृदय में, देवता के ध्यान में, पूजन में, वह भाव प्रकट करने की आवश्यकता है, जिससे कि शरीर का निर्बल तत्व उस देव की कृपा के कारण, अभीष्ट फल के कारण प्रबल हो जाय-यही तो रहस्य है, मनुष्य, मनुष्य के साथ छल कर सकता है, लेकिन क्या कोई साधक अपने देवता के साथ छल कर सकता है? जब कुछ पाना ही है, तो अपने मन को निर्मल बना कर, अपने जीवन के श्रद्धा-सुमन इस प्रकार अर्पित करना चाहिएं, कि देवता का आशीर्वाद, वरदहस्त पूर्ण रूप से प्राप्त हो।

आदि शंकराचार्य ने केवल पांच देवताओं के ही लिंग पूजन का विधान एवं व्यवस्था लिखी है, ये पंचलिंग—१-शिव का बाण लिंग, २-भगवान विष्णु का शालिग्राम लिंग, ३-सूर्य का स्फटिक बिम्ब, ४-शक्ति का धातु यंत्र तथा ५- गणपति का चतुष्कोणीय प्रस्तर माना है, साधक का कोई भी इष्ट हो सकता है, है, हमारे यहां वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, शाक्त सम्प्रदाय के अलावा भी कई अन्य सम्प्रदाय हैं, अब जो जिस देवता को इष्ट मानता हो, उसे केन्द्र में स्थापित कर अन्य देवताओं की आवरण देवता रूप में पूजा-साधना सम्पन्न करनी चाहिए, ऐसा ही विधान है।

नोट—पंचदेवों की साधना-उपासना के संबंध में पाठकों के नियमित पत्र प्राप्त होते रहे हैं, और जब यह साधना-उपासना विशेषांक प्रकाशित हो रहा है, तो यह आवश्यक ही हो गया है, कि इन पंचदेवों के रहस्य, साधना-उपासना का विवरण पूर्ण रूप से दे दिया जाय।

गणपति के सम्पूर्ण पूजन-विधान का वर्णन तो इसी अंक के प्रारम्भ में ही प्रकाशित कर दिया गया है, क्योंकि गणपति पूजन का विधान सभी पूजनों में सर्वप्रथम ही माना गया है।

गणपति की पत्नियां सिद्धि और ऋद्धि हैं, तथा सिद्धि से शुभ तथा ऋद्धि से लाभ पुत्र प्राप्त हुए, इसीलिए गणपति का पूजन-विधान सिद्धि-ऋद्धि, शुभ-लाभ का कारण माना जाता है।

पंचमहाभूत तत्व—जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी ही तो सबके शरीर में, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में स्थित हैं, इन तत्वों के देव ही तो पंचदेव—शिव, शक्ति, सूर्य, विष्णु और गणपति हैं, साधना में साधक अपने शरीर के निर्बल तत्व को प्रबल बनाकर ही पूर्णता की ओर अग्रसर होता है, मूल (जड़) के बिना विराट वृक्ष की कल्पना ही नहीं है, उसी प्रकार पंचदेव साधना तो—पूर्णता, ब्रह्मत्व, देवत्व, कुण्डलिनी जागरण का आधार है।

आगे सूर्य, शिव, विष्णु, शक्ति साधना के प्रत्येक रहस्य को स्पष्ट किया जा रहा है। ★

सूर्य साधना-उपासना
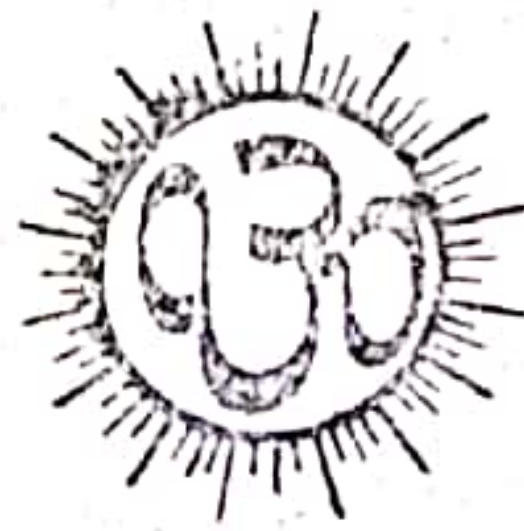
क्या सूर्य के बिना जीवन की कल्पना की जा सकती है ? सूर्य ही तो ऐसे प्रत्यक्ष देव हैं, जो जगत के नेत्र हैं, जो काल-चक्र के प्रणेता हैं, सूर्य से ही दिन-रात्रि, घटी, पल, मास आदि की गणना की जाती है, सूर्य से ही तो संसार प्रकाशमान है, और सूर्य के चारों ओर ही तो सभी ग्रह और यह पृथ्वी निरन्तर परिक्रमा करती है, सूर्य से प्रकाशित तेज के कारण ही तो इस संसार में ऊष्मा और तेज है, तात्पर्य यह है, कि सूर्य ही जीवन, तेज, ओज, बल, यश, नेत्र, श्रोत, आत्मा और मन के कारक हैं, और तीनों लोक सूर्य के ही तो अंग हैं ।

अन्य देवताओं को तो साधना-उपासना द्वारा, उनके स्वरूप को भीतर ही भीतर, भावना द्वारा ही समझा जा सकता है, लेकिन सूर्य देव तो नित्य-प्रति प्रत्यक्ष होने वाले, साधक के सामने ही स्थित हैं, तो इनको क्यों न सिद्ध किया जाय ? सूर्य की साधना साधक के भीतर ज्ञान और क्रियाशक्ति का उद्दीपन करती है, यह तेज कभी शान्त नहीं हो सकता, सूर्य की शक्ति संज्ञा, कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ नहीं, अपितु प्रारम्भ से पूर्णता तक है।

सूर्य पूजा-साधना के नियम

१-साधक कोई भी साधना करे, उसे प्रातः उठ कर सर्व-प्रथम सूर्य नमस्कार करना तो आवश्यक है ।

२-सूर्योदय होने से पूर्व ही साधक नित्य क्रिया से निवृत्त हो कर, स्नान कर, शुद्ध वस्त्र अवश्य धारण कर ले।

३-सूर्य की मूल पूजा उगते हुए सूर्य की पूजा ही है, और यही फलकारक है, अतः सूर्योदय के पश्चात् पूजन से कोई प्रयोजन सिद्ध हो नहीं होता ।

४-सूर्य को लाल कनेर के पुष्प विशेष प्रिय हैं, अतः साधक यही पुष्प सूर्य को अर्पित करे ।

५-सूर्य देव को सूर्योदय के समय पुष्पों के साथ ताम्रपात्र से तीन बार अर्घ्य देकर प्रणाम करना चाहिए ।

६-नेत्र रोग तथा निर्बलता से पीड़ित सूर्य-उपासक को रविवार के दिन नमक, तेल रहित भोजन केवल एक समय ग्रहण करना चाहिए, तथा उसे चक्षुष्मति विद्या का पाठ करना चाहिए ।

सूर्य साधना का क्रम

रविवार के दिन प्रारम्भ की जाने वाली इस साधना के समय ऊपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए, साधक अपने सामने **'सूर्य यन्त्र'** को स्थापित कर, उस पर चन्दन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर, इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुंम के साथ-साथ सिन्दूर भी अर्पित करें, और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में घोल कर, दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें कि—

"हे आदित्य ! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुख मण्डल, कमलनेत्र स्वरूप वाले, ब्रह्मा, विष्णु

तथा रुद्र सहित सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारक हैं, आपको इस साधक का नमस्कार ! आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दनयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।"

इसके साथ ही ताम्रपात्र से जल की धारा को, अपने दोनों हाथों में पात्र लेकर, सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें, और इसके पश्चात् **'मणिमाला'** से अपने पूजा-स्थान में स्थान ग्रहण कर, पूर्व दिशा में सूर्य की ओर मुंह कर निम्न सूर्य मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ।।

सूर्य साधना का यह प्रयोग यदि साधक प्रतिदिन करे तो अत्यन्त श्रेष्ठ रहता है, और उसकी साधनाएं सफल होती हैं।

सूर्य साधना और रोग

सूर्य तो आरोग्य के देव हैं, इनके सामने निर्बलता, रोग, जड़ता ठहर ही नहीं सकती, सूर्य का तात्पर्य ही आयु, बल, आरोग्य है।

नित्य प्रति सूर्य नमस्कार और प्राणायाम से शरीर का दूषित रक्त साफ होता है, और इस पूजा के निरन्तर अभ्यास से शरीर स्वस्थ, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी होता है।

चक्षुष्मति साधना तो सूर्य-उपासना का एक स्वरूप है, जो नेत्र रोगों को सम्पूर्ण रूप में दूर कर देती है, इसमें **'चक्षुष्मति यन्त्र'** स्थापित कर चाक्षुषी विद्या का पाठ नियमित रूप से सम्पन्न किया जाता है।

गायत्री मंत्र साधना–मूल रूप से सूर्य साधना ही है जिसमें सविता अर्थात् सूर्य से बल, बुद्धि, वीर्य, पराक्रम, तेज तथा सब प्रकार से उन्नति प्रगति की प्रार्थना की गई है।

चाक्षुषी विद्या पाठ

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय। मम् जात रूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथाहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्व जन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि-निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चक्षुष्मति विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीयते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ।।

"बत्तीसा यंत्र" भी सूर्य यंत्र का स्वरूप माना जाता है, और इस यंत्र को स्थापित कर, प्रतिदिन 'ॐ ह्रीं हंस' बीज मंत्र का हल्दी की माला से जप कर **'चाक्षुषोपनिषद'** का पाठ कर, सूर्य को अर्घ्य देने से, नेत्र रोग के अलावा पेट संबंधित **'एसीडीटी' रोग, पीलिया, गठिया, शारीरिक दुर्बलता,** दूर होती है।

लाल रंग की बोतल में जल भर कर सूर्य के प्रकाश में दिन भर रख कर वह जल ग्रहण करने से पेट संबंधित बीमारियां दूर होती हैं।

यह सूर्य ही है, जिसके द्वारा प्रकृति की समस्त शक्तियां प्राप्त होती हैं, नवग्रहों में ये प्रथम देव हैं, इनकी साधना उपासना विजय की साधना है, एक दिन प्रातः जरा उठ कर उदय होते हुए सूर्य की पूजा कर, नमस्कार कर इस साधना का आनन्द तो लें, यह आनन्द शरीर को ही नहीं मन को भी, कुण्डलिनी जागरण के बिन्दुओं को भी कंपित कर देने वाला आनन्द है। ✱

श्री विष्णु साधना

भारतीय शास्त्रों में कहीं पर भी किसी भी साधना के संबंध में, समाप्ति या अन्त का उल्लेख नहीं आता है, आदि देव को अनन्त माना गया है, अर्थात् जो प्रारम्भ से सीमारहित, अनन्त तक विस्तृत हों, वही अनन्त देव हैं, इस रहस्यमय प्रकृति का समाधान है—श्री विष्णु।

जो आदि है वही अनन्त हो सकता है, और भगवान विष्णु आदि देव हैं तथा अनन्त देव भी, जिन्हें समय काल की सीमा में बांधा नहीं जा सकता, जिनके स्वरूप को किसी एक रूप में स्थिर नहीं किया जा सकता, जिनके तेज से उत्पन्न सहस्रों देवी-देवताओं को नित्य-प्रति पूजा जाता है, उस अनन्त देव विष्णु के तेज का एक अंश भी प्राप्त हो जाय, तो फिर जीवन में कोई न्यूनता रह जाय-यह असंभव है, श्री विष्णु आकाश तत्व के अधिष्टाता हैं, आकाश का तात्पर्य है-विशालता, गहनता, महानता, ऊंचाई, और ये सब मन की स्थितियां ही तो हैं, कौन अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ना चाहता? कौन जीवन में अनन्त सिद्धियां प्राप्त नहीं करना चाहता? उसके लिए उस व्यक्ति में विष्णु तत्व तो प्रबल होना आवश्यक है, क्यों सभी नेतृत्व नहीं कर पाते? क्योंकि उनमें विष्णु तत्व नहीं है, उनमें तो केवल आंख मूंदकर एक निश्चित मार्ग पर चलने की भावना ही है, तो फिर जीवन घिसटता ही रहेगा।

विष्णु तो वह केन्द्रीय बिन्दु हैं, जहां से शक्तियों का देवों का उद्भव हुआ, विष्णु के ही तो अवतारों का पतन पालन हम नित्य देखते हैं, चाहे वह राम हों, कृष्ण हों, नृसिंह हों अथवा वाराह अवतार हों तो आदि देव विष्णु को कैसे भूला जा सकता है।

विष्णु साधना क्यों ?

विष्णु की साधना, अनन्त की साधना है, जो साधक के शरीर ही नहीं, मन के ऊपर आये दोषों का भी निराकरण कर उसमें तेज, कर्मशीलता का उद्भव कर, उसकी शक्ति को जागृत कर, शक्ति का विकास कर, साधक को अनन्त की ओर अर्थात् विशालता की ओर, उठने की ओर ले जाती है, सूक्ष्म से विराट की ओर, धरती से आकाश की ओर उठने की साधना विष्णु साधना ही तो है, जिस एक स्वरूप की साधना करने से अनन्त साधनाओं का, अनन्त देवों के प्रभाव का फल मिलता हो-वही विष्णु साधना है।

साधना क्रम

विष्णु का मूल नाम नारायण है, गायत्री इनका छन्द है, ॐ बीज है नमः शक्ति है, तथा इनका मूल अष्टाक्षर मन्त्र—'ॐ नमो नारायणाय' ही है।

ये साधना किसी भी चतुर्दशी को प्रारम्भ की जा सकती है, विष्णु मूल रूप से रजोगुण अर्थात् राज्य तत्व के देव हैं, इस कारण इनकी पूजा से व्यक्ति को राज्य-लाभ, राज्य-उन्नति, राज्य-बाधा से निवृत्ति, प्रतिष्ठा विशेष रूप से प्राप्त होती है।

स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने सामने एक बाजोट पर विष्णु का 'सालिग्राम लिंग' ताम्रपत्र पर अंकित 'विष्णु यन्त्र' स्थापित करें, सर्वप्रथम स्थान शुद्धि के पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर तुलसी पत्र ले कर, जल में डुबो कर, विष्णु के बारह स्वरूपों का ध्यान करते हुए सब दिशाओं में जल छिड़कें, विष्णु के ये बारह स्वरूप मन्त्र हैं—

ॐ ऐम् केशवाय धात्रे नमः ।
ॐ नम् आम् नारायणाय अर्यम्णे नमः ।
ॐ मोम् इम् माधवाय मित्राय नमः ।
ॐ मम् ईम् गोविन्दाय वरुणाय नमः ।
ॐ गम् उम् विष्णवे अंशवे नमः ।
ॐ वम् ऊम् मधुसूदनाय भगाय नमः ।
ॐ तेम् एम् त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः ।
ॐ वाम् ऐम् वामनाय इन्द्राय नमः ।
ॐ सुम् ओम् श्री धराय पूष्णे नमः ।
ॐ देम् ओम् हृषीकेशाय पर्जन्याय नमः ।
ॐ वाम् अम् पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः ।
ॐ यम् अः दामोदराय विष्णवे नमः ।

इसके पश्चात् विष्णु बीज मन्त्र की एक माला का जप 'आजानुलम्बिनी वैजयन्ती माला' से करें, प्रत्येक बीज मन्त्र के साथ एक 'कमल बीज' चंदन में डुबोकर सालिग्राम लिंग को अर्पित करें, पूजा स्थान में शुद्ध घी का दीपक तथा धूप अवश्य ही होनी चाहिए ।

श्री विष्णु बीजमन्त्र

।। ॐ नमो नारायणाय ।।

विविध मन्त्र

।। ॐ नमः भगवते वासुदेवाय ।।

।। ॐ श्री विष्णवे नमः ।।

।। ॐ श्री अनन्ताय नमः ।।

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात् साधक दोनों हाथों में सुगंधित पुष्प को अंजली में लेकर भगवान को अर्पित करे, कि मैं आपको अभीष्ट सिद्धि हेतु अपनी सम्पूर्ण पूजा समर्पित करता हूं, ।

विष्णु साधना : लक्ष्मी रहस्य

लक्ष्मी कहां निवास करती है ? जहां विष्णु की पूजा होती है जहां शंख, तुलसी, सालिग्राम की अर्चना होती है, लक्ष्मी तो विष्णु पत्नी है, जो विष्णु की शक्ति और विश्व का ऐश्वर्य है, इसीलिए विष्णु पूजा के साधक विष्णु साधना में लक्ष्मी की पूजा भी पूरे विधि-विधान सहित सम्पन्न करते हैं ।

जब भी विष्णु की पूजा साधना और स्थापना की जाय उसके साथ ही लक्ष्मी की पूजा, 'लक्ष्मी यन्त्र चित्र' स्थापित कर 'कमलगट्टे की माला' से लक्ष्मी बीज मन्त्र का जप भी अवश्य करना चाहिए ।
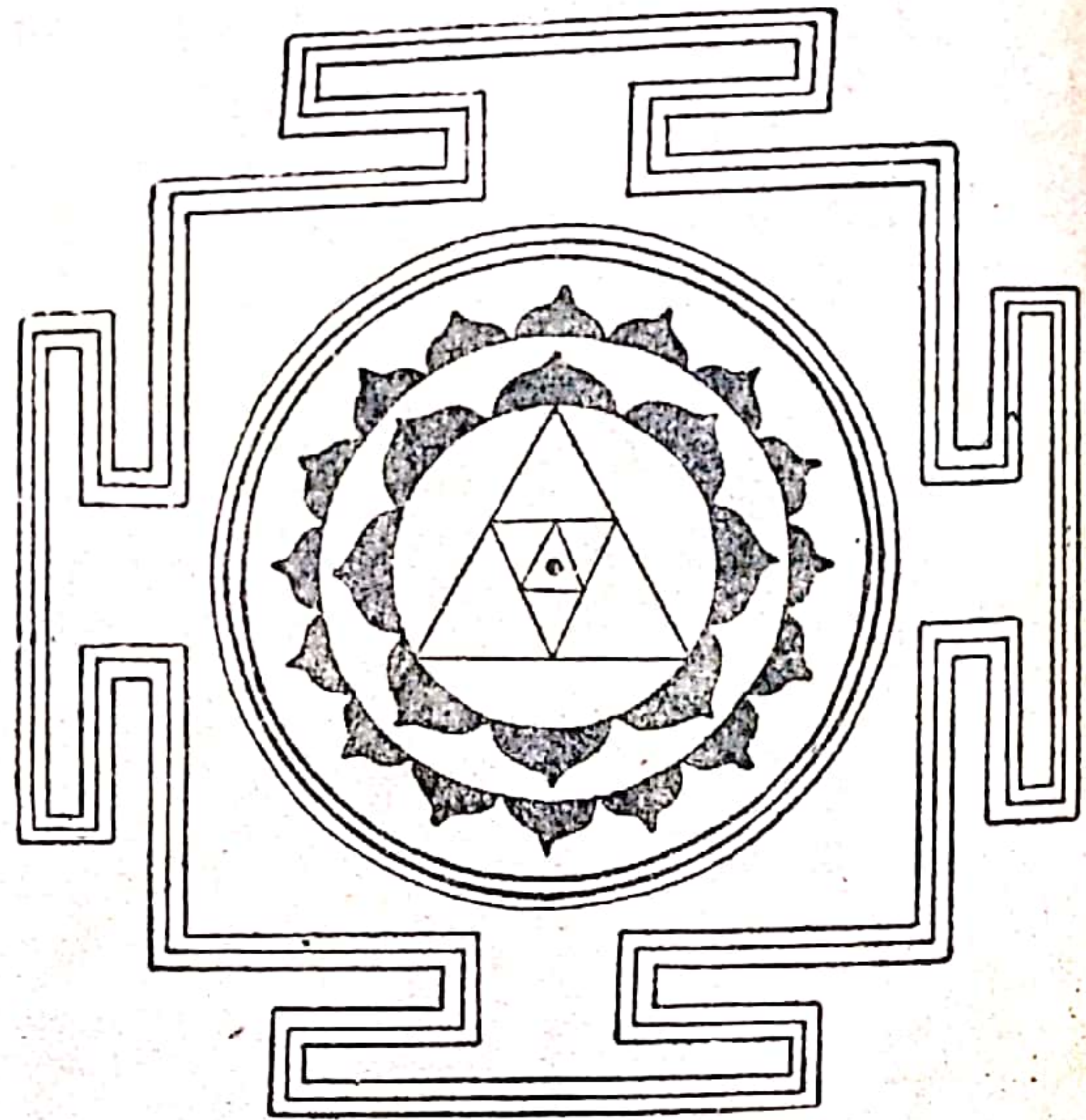
लक्ष्मी बीजमन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।

जिस प्रकार विष्णु सर्व व्यापक हैं उसी प्रकार उनकी दिव्य शक्ति महालक्ष्मी भी सर्वव्यापिका हैं, लक्ष्मी की कृपा दृष्टि से निर्गुण मनुष्य में भी ज्ञान, गम्भीरता, तेज सौभाग्य, सुख सहित सभी गुण प्राप्त हो जाते हैं, और सबके लिए वह आदर और श्रद्धा का पात्र बन जाता है । ✱

शिव पूजा साधना–उपासना

यदि कोई परम तत्व है, परम स्थिति है, परम प्रकाश है, और परमेश्वर है-तो वह शिव ही हैं, जो जाग्रत, स्वप्न और सुप्त तीनों अवस्थाओं से परे है–वह शिव ही हैं, जो ॐकार स्वरूप हैं, दिव्य ज्ञान हैं, समस्त शक्तियों के मूल आश्रय हैं वह शिव ही हैं, जो सबके रक्षक, सब सिद्धियों के स्वरूप, ज्ञान, बल, इच्छा, क्रिया-शक्ति के सम्पूर्ण तत्व, देवों के देव महादेव हैं–वह शिव ही हैं।

जो स्वयं साकार-निराकार दोनों स्वरूपों में हैं, पृथ्वी तत्व के स्वामी हैं, अर्थात् किसी भी प्रकार का भार उठाने में समर्थ हैं, जो मन्त्र तथा तन्त्र के चरम स्वरूप हैं सृष्टि के नियन्ता हैं, तथा अपने पास कुछ भी नहीं रखते हुए अपने साधकों, भक्तों पर परम प्रसन्न हो कर सभी ऐश्वर्य, सौभाग्य प्रदान कर देते हैं, वह शिव ही तो हैं, जो गणों, भूतों-पिशाचों में भी पूज्य हैं, और योगियों व देवताओं में भी आराध्य हैं, जो महामृत्युंजय है, शक्ति के स्वरूप हैं, क्योंकि जहां शिव हैं वहीं शक्ति है, वे शिव ही तो हैं, ऐसी कोई सिद्धि नहीं, ऐसा कोई ज्ञान नहीं, ऐसा कोई निर्वाण नहीं, जो शिव साधना से प्राप्त न होता हो।

कुबेर ने शिव की साधना से धनपति पद प्राप्त किया, इन्द्र ने अमोघ वज्र, ब्रह्मा ने पूर्ण चैतन्त सिद्धि, रावण ने स्वर्ण लंका, तो फिर साधारण जन में शिव के विभिन्न स्वरूपों के पूजा-साधना का इतना अधिक विधान है, तो आश्चर्य ही क्या ?

शिवत्व है पुरुषार्थ, प्रेम, शक्तिमान, सौभाग्य, बल, साहस, सिद्धि, सभी तांत्रिक साधनाएं शिव साधना का स्वरूप ही हैं, शिव की कृपा से कोई अधूरा नहीं रह सकता, चाहे वह किसी भी अवस्था में हो, किसी भी स्वरूप में हो, किसी भी रूप से उसने साधना भक्ति की हो, शिव अर्द्धनारीश्वर हैं, त्रिनेत्र हैं, ध्यानमग्न हैं, लेकिन उनसे कुछ भी अछूता नहीं है, वे पार्थिव भी हैं, और साकार भी, पार्थिव स्वरूप में शिवलिंग रूप में पूजित होते हैं, और साकार रूप में मूर्ति, चित्र, यन्त्र स्वरूप में पूजित होते हैं, शिव के साधक को न तो अपमृत्यु का भय रहता है, और न ही रोग का, और न ही शोक का, क्योंकि जहां शिव हैं वहां यम राज भी नहीं आ सकते, शिवत्व तो एक रक्षा चक्र है, शक्ति चक्र है ब्रह्म चक्र है, जो साधक को हर प्रकार से सुरक्षित कर देता है।

शिव साधना के नियम

शिव की साधना के नियम अत्यन्त सरल हैं, साधक भय-रहित होकर, अपना इष्ट मानते हुए शिव की पूजा, अर्चना, ध्यान करें।

१-शिव पूजन में साधक ललाट पर लाल चन्दन का त्रिपुण्ड और बाहों पर भस्म अवश्य लगाएं।

२-शिव साधना में रुद्राक्ष माला से ही मंत्र जप करना आवश्यक है।

३-शिव पूजा में श्वेत पुष्प, धतूरे का पुष्प तथा औंधा अर्थात् उल्टा (तीन पत्तियों से युक्त) बिल्व पत्र और दुग्ध मिश्रित जल धारा अर्पित करनी चाहिए।

४-शिव मंदिर में प्रदक्षिणा आधी ही होती है, अर्थात् पीछे जहां जल धारा बहती है जिसे सोमसूत्र कहा जाता है, वहां से प्रारम्भ कर आगे नन्दीश्वर तक ही करनी चाहिए, पूर्ण परिक्रमा सर्वथा वर्जित है।

५-शिव की स्तुतियां अभिषेक तो हजारों हैं, लेकिन पंचाक्षरी मन्त्र 'नमः शिवाय' का पाठ अवश्य ही करना चाहिए।

शिव पूजा साधना

साधक शिव साधना घर पर भी कर सकता है, और मंदिर में त्रयोदशी को भी जो प्रदोष कहलाती है, यह शिव प्रदोष व्रत है तथा प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्दशी मास शिवरात्रि कही जाती है, इन दिनों में शिव साधना प्रारम्भ की जा सकती है, सोमवार ही शिव का दिन है।

प्रातः स्नान कर अपने सामने दो ताम्र पात्र स्थापित करें, एक में 'शिव यन्त्र' तथा दूसरे में 'शिवलिंग' स्थापित करें, गृहस्थ साधक को अंगुष्ठ प्रमाण अर्थात् अंगूठे के बराबर शिवलिंग स्थापित करना चाहिए, शिव-लिंगों में भी नर्मदा का बाणलिंग सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जो कि पूर्ण सिद्धि, भक्ति, मुक्ति प्रदायक है, लिंग के साथ वेदी अवश्य होनी चाहिए, वेदी-तांबा, स्फटिक, सोना, पत्थर अथवा चांदी की बनाई जा सकती है।

वेदी, महादेवी अर्थात् शक्ति का स्वरूप है, और लिंग मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा उपर शिव स्वरूप है, इसी कारण एक शिवलिंग की पूजा से सभी पूजाओं का फल प्राप्त होता है।

प्रातः शुद्ध वस्त्र धारण कर, सर्वप्रथम स्थान शुद्धि, आसन शुद्धि कर, शिव का ध्यान करें, तथा रक्त चंदन से यंत्र पूजा कर, एक सुपारी रखें, चावल चढ़ाएं और एक बिल्व पत्र अर्पित करें, उसके पश्चात् एक माला 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप बोलते हुए करें, इसके पश्चात् शिवलिंग पूजन करें, सर्वप्रथम शिव का ध्यान कर लिंग के मस्तक पर एक पुष्प चढ़ाएं, और निम्न मन्त्र से शिव का आह्वान करें—

आह्वान मन्त्र

"ॐ पिनाक-धृक् इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निवेहि इह सन्निवेहि, इह सन्नि-रुहस्व, यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीय पशुपतये नमः। एतत् पाद्यं नमः शिवाय।।"

इसके पश्चात् 'ॐ शूलपाणे इह शू प्रतिष्ठितो भवः' इस मन्त्र से लिंग प्रतिष्ठा करें, और 'ॐ पशुपतेय नम.' मंत्र से लिंग के मस्तक पर तीन बार जल चढ़ाएं, फिर चावल अर्पित करें, उसके पश्चात् बिल्व पत्र चढ़ाएं और शिव की अष्ट मूर्ति पूजा, गन्ध पुष्प द्वारा क्रमशः करें—

एते गन्धपुष्पे ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।
एते गन्धपुष्पे ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

इसके पश्चात् मंत्र जप करें, मंत्र जप अपने कार्य के अनुसार करना चाहिए।

१- ॐ नमः शिवाय, यह सुख और सौभाग्य प्रदान करने वाला मूल शिव मंत्र है, इसकी पांच माला प्रतिदिन जप करना चाहिए।

२- 'ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं' यह अष्टाक्षर शिव मंत्र शत्रु बाधा निवारण व भय-नाशक मंत्र है।

३- 'रं क्षं मं यं औं अं' यह सर्व सिद्धि प्रदायक गृहस्थ सुख-शान्ति, संतान प्राप्ति का शिव मन्त्र है।

४- महामृत्युंजय मन्त्र—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

यह मंत्र नहीं अपितु ऐसा चमत्कारी विधान है जिसके जप करने से अकाल मृत्यु, रोग, बाधा, निर्बलता निश्चित रूप से दूर हो जाते है,।

शिव पूजा में शुद्ध शिव यन्त्र तथा शुद्ध शिवलिंग–जो प्राण प्रतिष्ठायुक्त हों, का ही प्रयोग करना चाहिए, अन्यथा सिद्धि के स्थान पर क्षति, अर्थात् निश्चित हानि भी हो सकती है। ★

आदि शक्ति महादुर्गा पूजा-साधना-उपासना

शक्ति का तात्पर्य है प्रकृति, माया अर्थात् जिसने प्रकृति के माया के विशाल भण्डार में से एक अंश को भी अपने अधीन कर लिया, वही शक्ति युक्त है, जहां शक्ति है, वहां दुःख, दुर्वेष्ण, दारिद्रय, दुर्भाग्य, अधर्म, अन्याय, आलस्य नहीं हो सकता, जहां शक्ति है वहां सौभाग्य, सम्पन्नता, शुद्धि, सिद्धि, बुद्धि, विद्या, ज्ञान, ऐश्वर्य, अग्नि, अजेयता है, शक्ति अग्नि तत्व की स्वामिनी है, जो शान्त नहीं रह सकती, इसीलिए उपनिषद में कथन है, कि महादेव ही शक्ति के रूप में ईश्वर हैं, शक्ति के बिना शव रूप हैं, शक्ति बिना किसी भी प्रकार का कार्य सम्पन्न हो ही नहीं सकता, तो फिर इस आधारभूत शक्ति को साधना-उपासना साधक पूर्ण रूप से सम्पन्न क्यों नहीं करता ?

शक्ति सगुण और निर्गुण, दोनों स्वरूपों में है, शक्ति के स्वरूप–तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, तुष्टि, पुष्टि कान्ति, लज्जा तो हैं ही इस महाशक्ति का स्वरूप ही लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री है, जब शक्ति सर्व सम्पन्न रूप में होती है, तो यह अपनी प्रकृति के अनुसार लक्ष्मी कहलाती है, तो चण्डी, काली, तारा, गौरी, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, भैरवी इत्यादि अपने गुणों के अनुसार नाम धारण करती है ।

शक्ति और साधक

जिस प्रकार अग्नि केवल हवा में नहीं रह सकती, उसी प्रकार शक्ति भी शक्तिमान के बिना अर्थात् साधक के बिना नहीं रह सकती, यह तो उससे जुड़ी हुई एक विशेष शक्ति है, जो केवल जन्म से ही उसके साथ हो, आवश्यक नहीं, अपितु उसकी साधना, इच्छा के अनुरूप प्रवाहित होती है ।

शक्ति, साधक को गतिशील बनाती है, जिस प्रकार अग्नि तीव्र होने पर, ऊपर उठती है, उसी प्रकार साधक के भीतर शक्ति तत्व का विकास होने पर वह अपने जीवन में ऊपर ही उठता जाता है, अपने दुर्भाग्य पर, अपनी दीनता पर, अपने आपको हीन समझने वाले साधक को तो शक्ति कभी प्राप्त हो ही नहीं सकती, जब वह स्वयं उठ खड़ा होता है, साधना करता है तो उसके भीतर छिपी शक्ति का विस्फोट होता है, और यह निश्चित है, कि एक शक्ति दूसरी शक्ति से जुड़ी है, तभी तो शक्ति साधक की पूर्णता करती है, माया और प्रकृति को उसके वश में करती है, यह महाशक्ति ही मायाधीश्वरी है, आद्या नारायणी शक्ति है, नारायण की महालक्ष्मी है, शिव की पार्वती है, गणेश की ऋद्धि-सिद्धि है, सूर्य की ऊषा है, इसके बिना तो सब कुछ अधूरा है ।

आदिशक्ति - महादुर्गा

दुर्गा को ही आदिशक्ति माना गया है, जिससे सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है और यही परब्रह्म-स्वरूपा, परम तेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, विश्व जननी, मूल प्रकृति, ईश्वरी है, आदि देवी दुर्गा से ही मरुद्गण, गन्धर्व अप्सरा, इन्द्र अग्नि, अश्विनी कुमार की उत्पत्ति हुई, और देवों के तेज स्वरूप में महाकाली के अतिरिक्त, धूमावती इत्यादि का प्रादुर्भाव हुआ, जो सब संसार की शत्रु बाधा को नष्ट करने मे समर्थ हैं ।

दुर्गा की साधना सभी प्रकार के साधकों को अवश्य ही करनी चाहिए, जिससे अष्ट सिद्धियां, विजय, लक्ष्मी, दीर्घायु प्राप्त होती है, जिससे किसी भी प्रकार की रोग-बाधा, कष्ट-बाधा दूर हो जाती है, दुर्गा साधना हेतु वर्ष की चारों नवरात्रि के अतिरिक्त किसी भी पक्ष की अष्टमी अथवा मंगलवार को प्रारम्भ की जा सकती है।

दुर्गा पूजा का मूल आधार **'शक्ति का धातु यन्त्र'** ही है अतः इस दुर्गा यन्त्र को जो चार द्वार, तीन वृत्त, आठ कमल, षट्कोण वाले विदुमय श्रीचक्र से पूर्ण हो, तथा प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, उसे अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर, मध्य में ताम्र पात्र रख कर, चावल का आसन देकर, यन्त्र को घी तथा दूध से शुद्ध कर, फिर जल धारा से स्वच्छ कर, सुगन्धित पुष्प के ऊपर स्थापित करना चाहिए।

तत्पश्चात् साधक सर्वप्रथम पुष्पांजलि अर्पित कर, देवी का ध्यान करे कि शंख, चक्र, कृपाण, त्रिशूल धारण किये हुए त्रिनेत्री, सिंह पर आरूढ़, अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण करने वाली, जिसके चारों ओर देवता स्थित हैं, और सिद्धि की इच्छा रखने वाले सेवारत हैं, उन जया-दुर्गा का मैं ध्यान करता हूं।

अपने पूजा स्थान में एक ओर घी का दीपक अवश्य जलाएं फिर नवदुर्गा चक्र स्थापित कर, नौ पुष्प चढ़ाएं और नवपीठ शक्तियों का पूजा निम्न मन्त्रों से सम्पन्न करें—

ॐ प्रभायै नमः।
ॐ मायायै नमः।
ॐ जयायै नमः।
ॐ सूक्ष्मायै नमः।
ॐ विशुद्धायै नमः।
ॐ नन्दिन्यै नमः।
ॐ सुप्रभायै नमः।
ॐ विजयायै नमः।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः।

इसके पश्चात् सामने जल अर्पित करें, अष्ट सिद्धियों की स्वामिनी दुर्गा के अष्टाक्षर मन्त्र का जप 'स्फटिक माला' से सम्पन्न करें, प्रथम पूजन के दिन पांच माला मंत्र जप आवश्यक है।

दुर्गा मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

दुर्गा साधना का यह प्रयोग पूर्ण हो जाने पर दुर्गा आरती सम्पन्न करें, तथा पुनः एक सुगन्धित पुष्पों की माला अवश्य चढ़ाएं।

दुर्गा पूजा साधना-आराधना का क्षेत्र एवं महिमा अत्यन्त विशाल है, क्योंकि इसकी साधनाओं के विविध स्वरूपों में शान्तिकारक, पुष्टिकारक तथा लक्ष्मी प्रदायक प्रयोग तो है ही, देवी के विभिन्न मंत्रों का विभिन्न प्रकार की तांत्रिक सामग्रियों सहित स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण एवं उच्चाटन में भी प्रयोग किया जाता है।

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती

व्यक्ति वही पूर्ण है, जिसमें बल पराक्रम हो, धन-धान्य अर्थात् पैसा हो, ज्ञान एवं वाणी में सिद्ध हो, और इन तीनों गुणों का साक्षात् स्वरूप महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती हैं, जो कि देवी के तीन प्रधान स्वरूप हैं।

नवार्ण मंत्र

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

इन साधनाओं को सम्पन्न करने से पहले साधक को देवी की मूल दुर्गा साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

सुमंगलकारक, सर्वकामफलप्रद, सर्वविघ्नहर्ता

महागणपति साधना

* गणपति विघ्नहर्ता व ऋद्धि सिद्धि प्रदाता हैं
* गणपति सभी देवों में प्रथम पूज्य हैं
* सब प्रकार के मंगल कार्यों में गणपति पूजन आवश्यक है
* शिव और शक्ति की साधना गणेश साधना है
* सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की सिद्धि गणपति साधना से ही संभव है

आइये, सभी साधक गणपति का वंदन कर इस साधना को नित्य पूजा का अंग बनाएं

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम् ।
आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे ।।
ओंकारमाद्यं प्रवदन्तिसंतो वाचः श्रुतीनामपि यं गृणन्ति ।
गजाननं देवगणानताङ्घ्रिं भजेऽहमर्धेन्दुकृतावतंसम् ।।

"जो ज्ञान तथा आनन्द के स्वरूप हैं, निर्मल स्फटिक तुल्य जिनकी आकृति है, जो समस्त विद्याओं के परम आधार हैं, उन हयग्रीव गणेश की मैं उपासना करता हूं, जो आदि ओंकार हैं, वेद की ऋचाएं भी जिनकी स्तुति करती हैं, जिनके सिर पर अर्द्ध चन्द्र शोभायमान है, समस्त देवता जिनके चरणों पर नतमस्तक हैं, उन श्री गणेश की मैं वन्दना करता हूं।"

श्री गणेश आदि स्वरूप, पूर्ण कल्याणकारी, देवताओं के भी देवता माने गये हैं, जिनकी उपासना-पूजा का उल्लेख वेदों में भी प्राप्त होता है, सभी प्रकार के पूजनों में प्रथम पूजन का अधिकार गणपति का ही माना गया है, इसके पीछे ठोस शास्त्रीय आधार है, किसी भी कार्य को पूर्ण रूप से सिद्ध करने के लिए समुचित प्रयत्न करना पड़ता है, लेकिन कई बार सभी प्रकार के प्रयत्नों को

पराकाष्ठा होने पर भी ऐन मौके पर कोई न कोई बाधा आ जाती है, इस प्रकार की बाधा को हटाने के लिए, जिससे कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो जाय, और जैसे-तैसे पूरा न हो कर जिस सफलता के साथ कार्य पूरा करने की इच्छा है उसी रूप में कार्य पूरा हो, इसके लिए ही गणपति पूजन विधान निर्धारित किया गया है।

गणेश पूजा ही क्यों ?

प्रतिभा और ज्ञान की भी एक सीमा अवश्य होती है, व्यक्ति अपने प्रयत्नों से किसी भी कार्य को श्रेष्ठतम रूप से पूर्ण करते हुए उज्ज्वल पक्ष की ओर विचार करता है, लेकिन उसकी बुद्धि एक सीमा के आगे नहीं दौड़ पाती है, बाधाएं उसकी बुद्धि एवं कार्य के विकास को रोक देती है, और यही मूल कारण है कि हमारे शास्त्रों में पूजा, साधना उपासना को विशेष महत्व दिया गया।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और पूर्णता ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा सम्पादित की जाती है, लेकिन सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही यह व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे, और विघ्न न आएं—यह भी गणेश के ही जिम्मे है, विघ्न-कर्ता और विघ्नहर्ता दोनों ही गणेश ही हैं, आसुरी प्रकृति के अभक्तों के लिए गणेश विघ्नकर्ता हैं, तो उनकी पूजा-उपासना करने वाले भक्तों के लिए विघ्नहर्ता और ऋद्धि-सिद्धि के प्रदाता हैं, इसी लिए श्री गणेश को "सर्व-विघ्नैकहरण, सर्वकामफलप्रद, अनन्तानन्तसुखद और सुमंगलमंगल" कहा गया है।

सभी प्रकार के देवता विभिन्न शक्तियों से सम्पन्न हैं, लेकिन विशिष्ट कार्य के लिए विशिष्ट शक्ति-सम्पन्न देवताओं का स्मरण, पूजन, साधना सम्पन्न करनी पड़ती है, इसीलिए सभी पूजनों में किसी भी कार्य को निर्विघ्न, पूर्ण फलयुक्त, मंगलमय रूप से पूर्ण करने हेतु श्री गणपति का पूजन किया जाता है।

विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं विनियोजितः।
गणानामाधिपत्ये च रुद्रेण ब्रह्मणा तथा॥

अर्थात् विनायक (गणेश) को विघ्नकारक कहा गया है, तब यदि उन गणेश की पूजा-साधना न की जाय तो विघ्न कैसे हट सकते हैं ?

॥ गं बीजं शक्तिरोंकारः सर्वकामार्थसिद्धये ॥

गणपति का बीज मन्त्र "गं" शक्ति का ओंकार शब्द है, और यह सब कामों को सिद्ध करने में समर्थ है।

गणेश का स्वरूप शक्ति और शिवतत्व का साकार स्वरूप है, और इन दोनों तत्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है, गणेश शब्द की व्याख्या अत्यन्त महत्वपूर्ण है, गणेश का "ग" मन के द्वारा, बुद्धि के द्वारा ग्रहण करने योग्य, वर्णन करने योग्य, सम्पूर्ण भौतिक जगत को स्पष्ट करता है, और "णे" मन, बुद्धि और वाणी से परे, ब्रह्म विद्या स्वरूप-परमात्मा को स्पष्ट करता है, और इन दोनों के "ईश" अर्थात् स्वामी गणेश कहे गये हैं।

श्री गणेश के द्वादश नाम

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

यह श्लोक गणेश-पूजन और उनकी साधना-उपासना के महत्व को विशेष रूप से स्पष्ट करता है, इसका तात्पर्य यह है, कि जो व्यक्ति विद्या प्रारम्भ करते समय, विवाह के समय, नगर में अथवा नये भवन में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं बाहर जाते समय, संग्राम अर्थात् शत्रु और

विपत्ति के समय, यदि श्री गणेश जी के इन बारह नामों का स्मरण करता है, तो उसकी उद्देश्य की पूर्ति में अथवा कार्य की पूर्णता में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता, गणेश जी के ये बारह नाम— १-सुमुख, २-एकदन्त, ३-कपिल, ४-गजकर्ण, ५-लम्बोदर, ६-विकट, ७-विघ्ननाशक, ८-विनायक, ९-धूम्रकेतु, १०-गणाध्यक्ष, ११-भालचन्द्र, और १२-गजानन हैं।

इनमें से प्रत्येक नाम का एक विशेष अर्थ है और विशेष भाव है, संक्षिप्त में यही कहना उचित है, कि साधक को अपने पूजा कार्य में गणेश की पूजा एवं इन नामों के जप को एक निश्चित स्थान अवश्य देना चाहिए।

मन्त्र-साधना और तन्त्र-साधना का मार्ग गुरु गम्य माना गया है, जो साधक गुरु-परम्परा से गणपति सपर्या की विद्या प्राप्त करते हैं, उन्हें ही उपासना में प्रवेश का अधिकार है।

तन्त्र शास्त्र के सबसे महान रचयिता भगवान परशुराम माने गये हैं और **"परशुराम कल्पसूत्र"** में जो कि तन्त्र शास्त्र का सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ है, लिखा है—

देवं सिद्धलक्ष्मी समाश्लिपृष्पार्श्वम्, अर्धेन्दुशेखर-मारक्तवर्णमातुलुगंगदापुण्ड्रेक्षुकार्मुकशूलसुदर्शनशंख-पाशोत्पलधान्यमंजरी निजदन्तांचलरत्नकलशपरिष्कृतपाण्येकादशकं प्रभिन्नकटमानन्दपूर्णमशेषविघ्न-ध्वंसिनं विघ्नेश्वरं ध्यात्वा।

अर्थात्, महागणपति के बाएं भाग में सिद्ध लक्ष्मी, मणिमय रत्न सिंहासन पर विराजमान हैं, और गणपति का शरीर करोड़ों सूर्यों के समान चमकीला रक्तवर्णीय है, मस्तक पर अर्द्धचन्द्र है, ग्यारह भुजाओं में मातुलुंग, गदा, इक्षु, सुदर्शन, शूल, शंख, पाश, कमल, धान्य, मंजरी, भग्नदन्त, तथा रत्न कलश हैं, ऐसे परमानन्द, पूर्ण, सर्व विघ्न-विध्वंसक महागणपति का ध्यान करना चाहिए।

परशुराम तन्त्र में और अन्य ग्रन्थों में गणपति पूजन का जो विवरण दिया गया है, उसकी अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग व्याख्या कर, बाद में रचनाकारों ने महागणपति पूजा के विभिन्न भेद कर दिये, आगे पत्रिका पाठकों हेतु महागणपति पूजन का प्रामाणिक विधान स्पष्ट किया जायेगा।

लोक जीवन में गणपति का स्थान

महागणपति का लोक जीवन में, लोक कथाओं में जो विवरण एवं स्थान है, उतना विवरण किसी अन्य देव शक्ति का नहीं होता, सामान्य बातचीत में किसी कार्य का शुभारम्भ करने को, कार्य का श्री गणेश कहा जाता है,

गणपति को ब्रह्मणस्पति कहा गया है, ब्रह्मण शब्द का अर्थ है– वाक् और वाणी, अतः ब्रह्मणस्पति का तात्पर्य वाक्पति, वाचस्पति, अथवा वाणी का स्वामी, अतः गणपति साधना करने से वाणी एवं विद्या सिद्धि प्राप्त होती है।

तन्त्र ग्रन्थों में भी लिखा है कि सभी मंगल कार्यों में प्रारम्भ में गणेश पूजन किया जाना आवश्यक है, क्योंकि गणेश पूजा से ही विघ्नों की शान्ति एवं सिद्धि प्राप्त होती है।

किसी भी प्रकार के पूजन में यदि गणेश जी की मूर्ति नही होती है तो पंडित लोग सुपारी पर मौली बांध कर गणेश की स्थापना करते हैं, दीपावली पर्व हो तो लक्ष्मी के साथ गणेश जी की प्रतिष्ठा निश्चित है, उत्तर-प्रदेश में तो किसी भोज के समय एक मंगल-घट चूल्हे के पास रख दिया जाता है, और कड़ाही का प्रारम्भ गणेश गांठ से किया जाता है, जल से भरे घड़े अथवा मंगल कलश में गणेश की प्रतिष्ठा सभी शुभ कार्यों में सम्पन्न की जाती है, बंगाल में वसन्त पंचमी महोत्सव तथा शिक्षा संस्कार समारोह में "सरस्वती गणेश" की पूजा की जाती है, गणेश चतुर्थी को उत्तर-प्रदेश के अवध क्षेत्र में "बहुला-चौथ" के रूप में सम्पन्न किया जाता है–जिसमें माताएं विधि-विधान सहित गणेश की पूजा करती हैं, महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में भाद्रपद सुदी चतुर्थी को स्थान-स्थान पर गणेश की प्रतिमा समारोह के साथ प्रतिष्ठित की जाती है और अनन्त चतुर्दशी को गणेश विसर्जन सम्पन्न किया जाता है।

पंजाब अथवा बंगाल, महाराष्ट्र अथवा मध्य-प्रदेश तमिलनाडु अथवा राजस्थान–प्रत्येक प्रदेश के साहित्य में जन जीवन में गणेश के पूजन का विधान है, और यह पूजन का एक अंग ही बन गया है।

शास्त्रोक्त गणपति पूजा विधान

यदि मन में आस्था है, तो कृपा किसी न किसी रूप में हो ही जाती है, लेकिन प्रत्येक पूजा-साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं, उनका पालन करने से विशेष फल अवश्य ही प्राप्त होता है।

गणपति के पूजा-विधान में विशेष बात यह है, कि चतुर्थी गणपति का प्रकट दिवस है, इसी कारण प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को **"गणेश-चतुर्थी"** और शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को **"विनायक-चतुर्थी"** कहा जाता है।

गणपति मूल रूप से जल तत्व प्रधान देवता हैं, और जल ही जीवन है, इसीलिए अपने जीवन में जल तत्व को

> आठ मूल दोष– आलस्य, कृपणता, दीनता, निद्रा, शिथिलता, अचैतन्यता, पुरुषार्थहीनता और विस्मृति—इन सभी दोषों का निराकरण गणपति पूजा साधना से ही सभव है।

तीव्र करने हेतु, पूर्णता प्राप्त करने हेतु गणपति का पूजन विशेष रूप से प्रभावकारी है।

गणपति पूजन में विशेष बात यह है, कि घर में तीन गणपति प्रतिमाएं नहीं होनी चाहिए, और मंगलवार के अतिरिक्त किसी भी अन्य वार को गणपति की स्थापना की जाती है, गृहस्थ व्यक्तियों को आसन पर बैठे हुए गणपति की स्थापना करनी चाहिए, और तन्त्र साधना करने वाले सन्यासियों को, खड़े गणपति की पूजा-साधना करनी चाहिए।

गणपति साधना में, पूजन में, **"गणपति प्रतिमा"**, **"गणपति यन्त्र"**, ताम्र पात्र, मौली, पुष्प, अबीर, गुलाल, नैवेद्य, जल तथा दूर्वा अर्थात् दूब और अक्षत विशेष रूप से आवश्यक हैं, इसके अतिरिक्त सुपारी को भी आवश्यक माना गया है।

पूजा क्रम

सर्वप्रथम साधक अपने स्थान पर स्वच्छ आसन पर बैठ कर आसन की पूजा करें, और सामने गणपति प्रतिमा तथा यन्त्र के लिए साफ लाल आसन बिछाएं, और उस पर गणपति यन्त्र तथा प्रतिमा स्थापित करें, अपने दाएं हाथ में ताम्र पात्र से जल लेकर पूजन का संकल्प करें और जल को भूमि पर छोड़ दें, इसके पश्चात् पात्र से जल लेकर चारों ओर छिड़कें, यन्त्र और प्रतिमा को धोकर आसन पर स्थापित करें, और हाथ में दीपक लेकर यह प्रार्थना करें कि,—"हे देव! आप समस्त विघ्न रूपी वनों का दहन करने में प्रबल हैं, विपत्ति एवं विघ्न के समय विघ्न विजयी रूपी सूर्य के प्रकाश से दसों दिशाएं प्रकाशित कर देते हैं, और समस्त विद्याओं, वैभव के

अधीश्वर हैं, आप स्थान ग्रहण करें।"

इसके पश्चात् साधक पुष्प, अबीर-गुलाल, अक्षत इत्यादि अर्पित करें और मौली, वस्त्र-स्वरूप चढ़ाएं।

गणपति पूजन में तुलसी का प्रयोग सर्वथा वर्जित है, दूर्वा अर्थात् दूब विशेष फलप्रदायक मानी गयी है।

इसके पश्चात् एक कोने में चार सुपारी चावलों की ढेरी पर स्थापित करें, और उनके सामने गणपति को चढ़ाया गया नैवेद्य रखें, ये चार सुपारियां गणपति के चार सेवकों–गणप, गालव, मुद्गल और सुधाकर की प्रतीक हैं, इन्हें गणपति का चढ़ाया हुआ प्रसाद ही चढ़ाएं, अब प्रतिमा के सामने बारह चावल की ढेरियां बनाकर प्रत्येक पर गणपति के बारह स्वरूपों — सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र, गजानन, का ध्यान करते हुए प्रत्येक का पूजन करें।

गणपति पूजन में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त "**गणपति यन्त्र**" विशेष आवश्यक है, क्योंकि यह गणपति की शक्तियों का साकार स्वरूप है, इसके पश्चात् नारियल तथा ऋतु फल अर्पित करें, और अपने स्थान खड़े हो कर दोनों हाथों से ताम्र पात्र से जल अर्पित करें, गणपति के बीज मंत्र के संबंध में बहुत अधिक मत-मतांतर हैं, इस संबंध में मूल बीज मंत्र तो केवल "गं" ही है, अतः साधक को "ॐ गं गणपतये नमः" बीज मंत्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठकर करना चाहिए।

इसके पश्चात् प्रदक्षिणा सम्पन्न कर आरती सम्पन्न की जानी चाहिए, गणपति की प्रतिमा का एक बार ही प्रदक्षिणा का शास्त्रोक्त नियम है।

गणपति की पूजा उपासना चाहे किसी भी विपरीत स्थिति में विधि-विधान सहित सम्पन्न की जाय, तो साधक की कामना-पूर्ति, यश-लाभ, विघ्नों से शान्ति, कष्टों का नाश, अवश्य ही प्राप्त होता है।

कुण्डलिनी जागरण में भी प्रथम चक्र अर्थात् मूलाधार चक्र को गणेश स्थान कहा गया है, अतः योग और तंत्र में भी सिद्धि तभी प्राप्त हो सकती है, जब गणपति की साधना में सिद्धि प्राप्त हो।